दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Program Mains-2023

ESSAY- 5

निर्धारित समय: 3 घंटे
Time allowed: 3 Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Jatin Kumar

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): Hindi

Email:

Center & Date: Online – 15.07.2023

UPSC Roll No.: 6307371

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

	Essay Topic No.	Marks
Section-A	1	50
Section-B	2	52
(Grand Total)	2	102

1403 Vinod Mishra

Evaluator (Signature)

Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency
2. Introduction Proficiency
3. Content Proficiency
4. Language/Flow
5. Conclusion Proficiency
6. Presentation Proficiency

→ आपकी विषय वस्तु में समझ ठीक है।

→ निबंध में तारतम्यता एवं निरंतरता लाने का प्रयास करें।

→ निबंध को और तथ्यपूर्ण एवं सटीकता से लिखने का प्रयास करें।

→ निबंध की भाषा शैली अच्छी है और बेहतर बनाएं।

→ निबंध में रोचकता लाने का प्रयास करें।

→ निबंध को और व्यावहारिक बनाएं।

Contact: 8750187501, 8448485517

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निबन्ध - 15-07-2023

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

1. "मनुष्य विभिन्न क्षमताओं के साथ पैदा होता है। यदि वे स्वतंत्र हैं, तो वे समान नहीं हैं और यदि वे समान हैं, तो वे स्वतंत्र नहीं हैं।"

'व्यक्ति स्वतंत्र जन्मा है, किन्तु वह हर जगह बेड़ियों से बंधा है।'

– रूसो

शुरुआत अच्छी है।

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर पहरे लगाने वाली गुलामी ना केवल समाज अपितु सभ्यता-भर के लिये खतरनाक है। रूसो अपनी उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह सर्वसिद्ध करना चाहते हैं कि अपनी मुट्ठी बंद करके इस प्रकृति में जन्मा एक अबोध शिशु जन्म के समय सभी मोह, भेद एवं अन्य बंधनों से मुक्त होता है किन्तु समय-अन्तराल पर वह सामाजिक बंधनों, परम्पराओं, कार्यकारी शक्तिओं, शासनकारी विधियों द्वारा स्वयं को बंधा हुआ पाता है। अतः उसका सम्पूर्ण जीवन इन्हीं बंधनों के मध्य व्यतीत होता है जो उसके विकास पर कहीं नकारात्मक तो कहीं सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

में — भारतीय संविधान की प्रस्तावना 'हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने एवं इसके समस्त नागरिकों को .... न्याय, ... स्वतंत्रता, ... समता, व्यक्ति की गरिमा, प्रतिष्ठा और अवसर की समता, राष्ट्र की एकता व अखण्डता --- बंधुत्व बढ़ाने के लिए दृढ़संकलिपत होकर संविधान आज दिनांक 26 नव., 1949 को अंगीकृत, अधिनियमित एवं आत्मार्पित करते हैं।'

उपर्युक्त प्रस्तावना में भी भारतीय नागरिकों को प्रदत्त स्वतंत्रता एवं समानताओं का उल्लेख किया गया है। स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये जहाँ अनु. 19 से अनु. 22 की व्यवस्था की गयी है वहीं दूसरी ओर समानता के विभिन्न स्वरूपों जैसे- प्रतिष्ठा एवं अवसर की समता को अनु. 14-18 में सारगर्भित करने का प्रयास किया है।

यदि फ्रांसीसी क्रांति से प्रारम्भ किया जाये तो इस क्रांति के मूल में फ्रांसीसी लोगों द्वारा झेले गये असमान

व्यवहार की अवधारणा ही है तो दूसरी ओर अमेरिकी क्रांति में भी रेड इंडियन्स ने इसलिए क्रांति का सहारा लिया ताकि समानता स्थापित हो सके।

'बिना प्रतिनिधित्व के कर नहीं'

जैसी कथनी भी तभी सामने आयी जब नागरिकों को महसूस हुआ कि वास्तव में वे असमान रूप से व्यवहार किये गये हैं।

भारतीय संस्कृति में महिलाओं को पुरुष की तुलना में श्रेष्ठतर स्थान प्रदान किया है तो पुरातन में उन्हें देवी समझा गया है तभी तो

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवता।'

जैसी उक्तियां सार्थक रही हैं। वैदिक सभ्यता के पूर्व-वैदिक काल में जहाँ एक ओर घोषा, लोपामुद्रा एवं विश्ववारा जैसी स्त्रियों की उपस्थिति रही तो दूसरी ओर उत्तर वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी ने पुरुषों के समक्ष या फिर उनसे भी उच्चतर योगदान दिया। एक पितृसत्तात्मक भारतीय समाज में जहाँ कन्नगी को एक आदर्श स्त्री के रूप में स्थान मिला है तो दूसरी ओर

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

सातवाहन राजाओं ने अपनी माताओं के नाम को अधिक अहमियत दी है जैसे - गौतमीपुत्र शातकर्णि। जहाँ इतिहास में रजिया सुल्ताना का एक बेजोड़ चरित्र है वहीं नूरजहाँ जैसी स्त्रियों का मुगल साम्राज्य में योगदान उल्लेखनीय है। जहाँ मुमताज आज भी ताजमहल की दीवारों में प्रतिबिम्बित होती है वहीं रानी लक्ष्मीबाई की तलवार उनकी गाथा कहती नजर आती है।

सार रूप में यह कथन किया जा सकता है कि जहाँ जहाँ स्वतंत्रता ने स्त्रियों का दामन थामा, वहाँ - वहाँ स्त्रियों ने अपने प्रयासों एवं ज्ञान से पुरूषों के बराबर खड़े होने एवं चुनौती देने से गुरेज नहीं किया।

चूँकि उन्हें अवसर मिले तो उन्होंने सिद्ध किया कि वास्तविकता एवं सोच में भिन्नता होती है। यदि स्वतंत्रता दी जाये एवं व्यक्ति क्षमताओं का प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र हो तो वह नये कीर्तिमान स्थापित करता है।

एक ऐसा समाज जहाँ स्वतंत्रता नहीं दी गयी है वहाँ दो व्यक्तियों के मध्य समानता देखी जा सकती है किन्तु यह समानता भी अन्य उच्चतर लोगों से नहीं होगी। वे हमेशा श्रेष्ठ रहेंगे एवं निम्न हमेशा निम्नतर।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहां भारत के एक ओर सामाजिक समस्याएं मुंह बाए खड़ी थी तो दूसरी ओर विकास भी अवश्यम्भावी था क्योंकि बदलते विश्व से कदमताल मिलानी आवश्यक थी। पश्चिमी विश्व की लोकतांत्रिक विचारधारा जोर पकड़े हुई थी जहाँ सभी लोगों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं। भारत की स्थिति, ब्रिटेन ने सोने की चिड़िया से बदलकर निर्भर देश की कर दी थी। ऐसी स्थिति में सभी नागरिकों को पूर्ण अधिकार देने का अर्थ था कि इसके लिए विशाल मशीनरी की आवश्यकता होगी लेकिन भारत ने यही चुना एवं सभी नागरिको को समान अधिकार दिये। एक ऐसा देश जिसने विदेशी हमले झेले हों, जिसके लोगों को पराधीनता सुबह-शाम परेशान करती हो, वहाँ लोकतंत्र आया, वहाँ लोगों को अधिकार मिले। प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार।

'मानव अधिकारों के बिना व्यक्ति, पशु समान है।'

स्वतंत्रता प्राप्ति का अर्थ था कि सभी व्यक्ति अब अपने अनुसार कार्य कर पायेंगे, अपना विकास एवं खाद्यान्न की सुनिश्चितता कर सकेंगे।

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

जिसका प्रभाव पड़ा भी और भारत ने प्रगति के पथ पर कदम रखा।

महिलाओं, दलितों, अल्पसंख्यकों ने अपनी क्षमताओं का प्रयोग करना प्रारम्भ किया, क्षमताओं में वृद्धि की एवं स्वयं को साबित किया।

दलितों के साथ अत्याचार का पुराना इतिहास रहा है जहाँ उन्हें शीर्ष वर्ण के लोगो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) से निम्नतर समझा जाता है एवं उनका व्यवसाय भी निर्धारित था — कूड़ा उठाना एवं शीर्ष वर्ण के लोगों की सेवा करना। बस्तियाँ भी इस तरह स्थापित थी कि शीर्ष वर्ण के लोगों को वायु पहले प्राप्त हो तथा बाद में दलितों तक पहुँचे। उनकी पहुँच शिक्षा व शास्त्रों तक नहीं थी। ऐसा नहीं है कि उनमें क्षमताओं का अभाव था जबकि मूल कारण है उनके साथ किया गया भेदभाव एवं उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश जिसने ना तो उन्हें अवसर मिले और ना ही अधिकार।

'अस्पृश्यता, मानवाधिकार हनन का सबसे निकृष्ट रूप है।'

महात्मा गाँधी ऐसी अस्पृश्यता को

अत्यधिक खतरनाक एवं विकास में अवरोधक मानते थे। डॉ. अम्बेडकर के अनेकानेक प्रयासों का नतीजा हुआ कि संविधान में अनु. 17 के तहत अस्पृश्यता के अंत को प्रत्येक व्यक्ति का मूल अधिकार बना दिया गया एवं दलितों को सभी अधिकार प्राप्त हुए, इसके अतिरिक्त आरक्षण की व्यवस्था की गयी (रोजगार, शिक्षण संस्थाओं एवं लोकसभा तथा विधानसभा)। परिणामस्वरूप विधि निर्माण में इनकी भागीदारी बढ़ी तो सरकारी कार्यालय के ग्रुप A सेवाओं तक इनकी पहुँच (12%)

भारत सरकार ने स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने हेतु स्टैण्ड अप इंडिया कार्यक्रम चलाया, प्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं सिविल सेवा, SSC जैसे रोजगार पाने के लिए मुफ्त कोचिंग की व्यवस्था की - इससे स्थापित हुआ सामाजिक न्याय और शासन व्यवस्था में बढ़ी इनकी हिस्सेदारी। अतः क्षमता को स्वतंत्रता ने सहारा दिया तो परिणाम हुआ दलितों को उद्धार।

'उठो और तब तक संघर्ष करो जब तक कि तुम्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाये।'

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

स्वतंत्रता एवं समानता एक दूसरे के पूरक हैं जहाँ समानता लाकर स्वतंत्रता स्थापित की जा सकती है वहीं स्वतंत्रता के बिना समानता सम्भव नहीं है। स्वतंत्रता किसी व्यक्ति को दिया गया खुला हाथ है जो वह अपनी क्षमताओं का उपयोग एवं इन्हें विकसित करने में लगाता है ताकि वह औरो से श्रेष्ठ हो सके- ज्ञान में, कौशल में, परिस्थितियों में, रहन-सहन के स्तर में एवं भागीदारी में।

वर्तमान वैश्विक सरकारें इन दोनों तत्वों को साथ-साथ लेकर चलती हैं जिससे एक समावेशी समाज की संकल्पना साकार होती है। भारतीय संविधान समानता को दो तरीकों से देखता है - विधि के समक्ष समता एवं विधियों का समान संरक्षण जबकि स्वतंत्रता को वाक् व अभिव्यक्ति, संचरण, संघ, निवास, वृत्ति के साथ-साथ जीवन की स्वतंत्रता तक के रूप में देखता है।

ब्रिटेन में संसद सर्वोच्च है तो भारत में संविधान एवं संविधान के स्त्रोत हैं भारत के नागरिक। ऐसा संविधान संशोधन अनपेक्षित है जो स्वतंत्रता एवं समानता को समाप्त करे।

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

एक अन्य पहलू पर गौर किया जाये तो मो॰ बिन कासिम के भारत पर आक्रमण से लेकर मुगल सल्तनत की स्थापना तक भारत के लोगों ने स्वयं की क्षमता को साबित करने का भरसक प्रयास किया है।

मो॰ गोरी से पृथ्वीराज का तराईन युद्ध हो जहाँ चौहान की क्षमता ने ही उसे गोरी के सम्मुख खड़ा होने की स्वतंत्रता दी जबकि अनेक राजाओं ने बिना लड़े समर्पण भी किया। इसके उपरान्त समय-समय पर छोटे-छोटे युद्ध एवं उपद्रवों ने भी इसी का उदाहरण पेश किया। मुगलिया सल्तनत के विरुद्ध लड़े राणा सांगा हों तो एक बात है किन्तु भारत की आन का पराक्रम जब युद्ध क्षेत्र में हेमू के रूप में बोला तो बैरम खान जैसे सेनानायकों के भी हौसले डिगते देखे गये हैं। अगर उस असीम शक्ति की मंजूरी होती तो भारत का इतिहास लिखने के लिए हेमू की ताजपोशी करनी पड़ती और फिर स्वतंत्र जन्में हेमु की क्षमताओं की कहानी किताबें ही कहती।

'एक तीर काश चल ना पाता,
एक आँख काश बच ही जाता।'

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

इसके उपरान्त भी अकबर के शासनकाल में राजा जयसिंह की कहानियां, मेवाड़ के महाराणा प्रताप का शौर्य हो, बीरबल की कुशलता हो, तानसेन के राग हों सभी ने सिद्ध किया है कि भारत भूमि ने सदैव कौशल जन्मा है जिसने स्वतंत्रता को सीढ़ी बनाकर उत्तरोत्तर विकास किया है।

दर्शन में रामानुजाचार्य हों, शंकराचार्य हों सभी ने अपनी स्वतंत्रता एवं ज्ञान का उपयोग मानव भलाई के लिए किया। कबीर के दोहे हों, सूरदास की रचनाएं हों, मीरा की वाणी हो या रैदास की कविता सभी ने समानता का जिक्र किया है।

आधुनिक कवियों में मैथिलीशरण गुप्त से लेकर महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं महादेवी वर्मा तक सब इस बात के पक्षधर हैं कि स्वतंत्रता एवं समानता दोनों अत्यावश्यक हैं।

"जहाँ मस्तक गर्व से ऊँचा हो,
जहाँ मन में विश्वास हो,
जहां विश्व संकीर्ण दीवारों में
नहीं बंटा हो ...

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

रविन्द्रनाथ टैगोर एक ऐसे विश्व की संकल्पना करते हुए स्वतंत्रता को परिभाषित करते हैं वहीं विवेकानन्द – 'महिलाओं को पढ़ाओ और उन्हें छूट दे दो, वे खुद तुम्हें बताएगी कि किस क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है।'

ने महिलाओं की स्वतंत्रता निर्धारण के लिए भिन्न मनोवृत्ति प्रस्तुत की है।

उपरोक्त विश्लेषण इस बात का गवाह है कि स्वतंत्रता हालांकि आवश्यक है किन्तु चंद क्षेत्रों तक सीमित होने से इसका महत्व न्यून हो जाएगा अतः स्वतंत्रता व समानता का ऐसा सुमेल आवश्यक है जो वर्तमान व्यवस्था पर खरा उतरे।

निबंध में रोचकता का अभाव है।

निबंध निष्कर्ष को और प्रभावी बनाएं।

50/125

निबंध की विषय-वस्तु अच्छी है परन्तु निबंध के प्रस्तुतिकरण को और प्रभावी एवं तार्किक बनाएं।

प्रश्न संख्या (Question No.)	U.P.S.C.	इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

उ॰ 6.

'बारिश की एक बूंद कभी भी बाढ़ के लिए जिम्मेदार नहीं लगती।'

'बूंद-बूंद से घड़ा भरता है।'

उपर्युक्त कहावत अत्यन्त प्राचीन है जिसके माध्यम से यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि विशाल समुद्र भी बूंदों का समावेश है तो विशाल मरुस्थल में भी रेत के कण एकत्र हैं अर्थात् एक घड़ा भरने के लिए भी व्यक्ति को एक बूंद से प्रारम्भ करना पड़ता है। इसे सामाजिक जीवन में भी किसी बच्चे के जन्म से मृत्यु तक उसके ज्ञान व कौशल के संग्रह, आर्थिक बचत एवं सामाजिक पूंजी के रूप में देखा जा सकता है।

प्रारम्भ करने के लिए किसी एक व्यक्ति द्वारा शुरुआत करनी होती है फिर एक मेला लगता जाता है।

'मैं तो अकेला ही चला था गर्दिश-ए-सफर में,
लोग मिलते गये, कारवाँ बनता गया।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

भारतीय संस्कृति अति-प्राचीन संस्कृति है जहाँ मानव-मूल्यों, सामाजिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। मध्य एशिया के आक्रान्ताओं से जूझने के बाद, अंत में भारत ब्रिटेन का गुलाम बन गया। गुलामी की इन्हीं जंजीरों को तोड़ने की कोशिश की गयी -1857 की क्रांति द्वारा। बैरकपुर की छावनी में फैली सूचना के अनुसार बन्दूकों के कारतूस में प्रयोग की गयी चर्बी सूअर एवं गौमाँस की थी जिससे प्रत्यक्षत: धार्मिक मान्यताएँ प्रभावित होनी ही थी। मंगलपाण्डे द्वारा की गयी मनाही अंग्रेजी शासन की जड़ें हिलाकर रख देगी, ऐसी कल्पना किसी ने नहीं की थी। एक छोटी सी बूँद ने बारिश का कहर बरपाया और फिर आयी 1857 की क्रांति की बाढ़।

लोग एकत्रित हुए और अंग्रेजी राज के खात्मे की माँग करने लगे। छोटे-बड़े, जवान-बूढ़े, अमीर-गरीब, कृषक-सैनिक सबने इस बूँद को बाढ़ बनाने में योगदान दिया। हालांकि इस बाढ़ की क्रांति में अंग्रेज बहे नहीं किन्तु उनकी नींव चरमरा चुकी थी।

क्रांति का उद्भव आधुनिक राजनैतिक परिदृश्य में अमेरिका एवं फ्रांस से माना जाता है। फ्रांस की जनता को समान अधिकार ना मिल पाने की स्थिति में वे शासन के समक्ष खड़े हो गये और इसी चिंगारी ने 14 जुलाई, 1789 को बास्तील किले को ध्वस्त कर दिया, राज्य से राजशाही समाप्त कर दी, सभी को समान अधिकार प्राप्त हुए, समानता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व जैसे नवीन मूल्यों का उद्भव हुआ एवं फ्रांसीसी लोगों का स्वयं पर अधिकार स्थापित हुआ।

'हर एक कार्य की कीमत होती है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा।'

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सती प्रथा जैसी कुप्रथाएँ भारतीय समाज में व्याप्त थी जो सीधे तौर पर महिलाओं के अधिकारों एवं उनकी गरिमा पर प्रहार थी। राजा राममोहन राय के अथक प्रयासों का प्रभाव यह रहा कि 1829 में सती प्रथा के निषेध का कानून बनाया गया।

प्रश्न संख्या
Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने महिलाओं की शिक्षा के लिए बेथुन स्कूल स्थापित करने में सहयोग किया वहीं विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दिलाने के उनके प्रयासों को वर्तमान मानव समाज को जानना चाहिए। ज्योतिबा फुले के जाति विरोधी कार्य हो या शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए अपनी पत्नी के साथ मिलकर विद्यालय स्थापित करने एवं संचालन की प्रक्रिया - सभी एक सोच को वास्तव रूप में स्थापित करने में परिलक्षित होते हैं।

इसके विपरीत मो. अली जिन्ना द्वारा की गयी जिद की वजह से भारत दो हिस्सों में बँट गया। अर्थात एक बूँद ने ही धार्मिक अत्याचार, शोषण, लाखों लोगों की मृत्यु, हिंसा, उग्रवाद की तबाही ला दी। इसके विपरीत रविन्द्र नाथ टैगोर ने निम्न बात कही-

'मैं तब तक राष्ट्रवाद का विरोध करूँगा जब तक यह मानवता के विरुद्ध है।'

अर्थात टैगोर ने राष्ट्र की अपेक्षा मानववाद को अधिक प्रोत्साहन दिया।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में निरन्तर कांग्रेस की सरकारें स्थापित हुई एवं लगभग 30 सालों तक कांग्रेस का एकपक्षीय शासन रहा। इन्दिरा गाँधी के प्रधानमंत्री काल में उनके द्वारा चुनाव जीतने के लिए सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग के विरुद्ध राजनारायण ने उच्चतम न्यायालय में केस कर दिया। यह बूँद कारण बनी एक बाढ़ का और इसी चिंगारी ने भारत में आपातकाल का काला अध्याय लिखे जाने की प्रस्तावना तैयार की। तत्कालीन राष्ट्रपति ने भारत में आपातकाल की घोषणा कर दी जिससे लोगों के मानव अधिकारों एवं मूल अधिकारों की घोर अवमानना हुई लेकिन इसकी परिणति हुई इन्दिरा गाँधी सरकार समाप्त होने के रूप में और भारतवर्ष में एक नयी जनता पार्टी की सरकार स्थापित हुई।

'जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।'

उपर्युक्त पंक्तियों का सार आपातकाल के रूप में देखने को मिला। भारतीय इतिहास एक नवीन पृष्ठ लिखने चला था, नया नेतृत्व बागडोर संभालने को तैयार था, राजनीति के नये प्रारूप का उद्भव हुआ - गठबंधन की राजनीति।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

उन सबसे अलग जहाँ बूँदे, सागर बनी, जहाँ एक सोच, परिवर्तन बनी और चिंगारी, अग्नि बनी, उनमें महत्वपूर्ण है पर्यावरण प्रदूषण व जलवायु परिवर्तन। पर्यावरण में हानिकारक तत्वों के समावेश को पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। प्रकृति माता ने मानव को सुन्दर, सौम्य आवास, फल, ईंधन प्रदान किये तो मनुष्य ने अपने निजी हितों के लिए प्रकृति के सिद्धान्तों की अवमानना की एवं प्रकृति में व्यापक स्तर पर परिवर्तन किये।

व्यक्ति जब स्वयं तक सीमित रहता है तो उसके द्वारा उपयोग किये गये जल-रसायन उर्वरक, कीटनाशक, वाहन द्वारा छोड़ी गयी CO_2, NO_x जैसी हानिकारक गैसें, थोड़ा-थोड़ा कूड़ा-कचरा एवं प्लास्टिक से क्या ही जायेगा? ऐसी सोच रखता है लेकिन यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि विभिन्न महासागरों में आधे से अधिक कचरा प्लास्टिक है तो वातावरण में CO_2 की मात्रा में दिन प्रतिदिन वृद्धि देखी जा रही है, सड़क पर गाड़ियाँ, मानव से ज्यादा हैं, भूमि ने अपनी प्राकृतिक उपज देना छोड़ दिया है। ये सब हुआ 'मेरे अकेले से क्या होगा' की सोच से।

प्रश्न संख्या (Question No.)	U.P.S.C.	इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

इसी तरह निर्वनीकरण, भूमि उपयोग परिवर्तन एवं शहरी कंक्रीट का प्रभाव समावेशी रूप से जलवायु परिवर्तन के रूप में देखने को मिला है। IPCC की 6th आकलन रिपोर्ट में इसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए जलवायु संतुलित करने की उचित परिस्थिति बताया है।

'जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होने वाली हम प्रथम पीढ़ी हैं और इसे रोक सकने वाली अंतिम पीढ़ी।'

– बराक ओबामा

अतः हमें केवल मुझसे क्या होगा जैसी सोच से बाहर निकलकर मुझसे कुछ तो होगा जैसी सोच पर कार्य करना होगा। वैश्विक स्तर पर किये गये प्रयास जैसे - UNFCCC की स्थापना, UNEP, WMO एवं प्रतिवर्ष होने वाली COP की मीटिंग भी जलवायु परिवर्तन को रोकने में अहम योगदानकर्ता है। COP-2015 में पेरिस मे हुई वार्ता के अनुसार सभी देशों को INDC निर्धारित करने थे एवं भारत ने COP-26 में ग्लास्गो में पंचप्रण प्रस्तुत किए।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

अन्तर्राष्ट्रीय सोलर अलायंस तथा लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट (LiFE) जैसे भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा सुझाए गए उपाय हों जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर कार्य कर सकता है। जब एक व्यक्ति पानी की एक बूँद बचाएगा तो प्रतिदिन पानी की 7-8 अरब बूँदे बचेंगी जिससे धारणीय विकास की नींव स्थापित होगी। मतलब साफ है कि जिस तरह एक एक करके हमने प्रकृति, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया है वैसे ही एक-एक करके अपने नैतिक उत्तरदायित्वों का पालन करके हमें प्रकृति संरक्षण एवं सुरक्षा की जरूरत है।

'प्रकृति एक जीवित जीव है।
इसके भी मानवाधिकार हैं।'

-मद्रास उच्च न्यायालय

संभववादियों के अनुसार प्रकृति में मानव अपने अनुरूप परिवर्तन कर सकता है किन्तु ये परिवर्तन प्रकृति की मूल अवस्था को बनाए रखें। पर्यावरण एवं विकास में समन्वय बना रहे।

निष्कर्ष में तारतम्यता लाना और निष्कर्ष को और बेहतर बनाएं।

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything in this part)

यही एक बूँद का सिद्धान्त विभिन्न सामाजिक आन्दोलनों का केन्द्र बिन्दु रहा जहाँ एक बूँद से धीरे-धीरे आयी बाढ़ ने सम्पूर्ण प्रशासन को यह बताने की सफल कोशिश की कि परिवर्तन, समाज का नियम है।

अरुणा रॉय के तिलोनिया (RJ) में अपने पति बंकर रॉय के साथ किये गये सामाजिक प्रयासों की कहानी तो अपने आप में परिवर्तनकारी है। उनके द्वारा बनाये गये मजदूर किसान शक्ति संगठन (MKSS) ने गाँव स्तर पर कार्य करना प्रारम्भ किया एवं प्रशासन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए RTI की माँग की। 2004 की गठबंधन सरकार के समय निर्मित कॉमन मिनिमम प्रोग्राम के लिए बनायी गयी राष्ट्रीय एडवाइजरी समिति में अरुणा रॉय एक सदस्य बनायी गयी। इसके बाद RTI एक कानून के रूप में, 2005 मे अस्तित्व में आया।

2010 के बाद अन्ना द्वारा किये गये भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलन भी एक बूँद के बाढ़ बनने की कहानी कहते हैं।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

अपने गाँव रालेगण सिद्धि (महाराष्ट्र) में उनके जल संरक्षण के प्रयासों ने जब रंग दिखाना शुरू किया तो उन्होंने भ्रष्टाचार को अपना निशाना बनाया और दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में सरकार को घुटने पर लाने के लिए मजबूर कर दिया जिसकी परिणति हुई- लोकपाल। ## indiaagainst Corruption

इसी तरह 'जल पुरुष' राजेन्द्र सिंह के अलवर में (RJ) अरवरी ग्राम पानी संसद बनाने से जल स्तर में आयी वृद्धि हो तो दूसरी ओर नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी द्वारा "बचपन बचाओ आन्दोलन" NGO के माध्यम से बेगारी, तस्करी व गुलामी में फँसे 86000 से भी अधिक बच्चों को बचाना हो, सबने सकारात्मक परिवर्तनों की बाढ़ ला दी है।

शिक्षक भेराराम भाखर के प्रयासों से किये जा रहे पौधारोपण, IAS संदीप GR के पर्यावरण संरक्षण के प्रयास, IAS रेजा राजेश्वरी के बाल विवाह को रोकने के प्रयास, IPS शिवदीप लाण्डे द्वारा गैर-विधिक कार्यों के लिए (विरुद्ध) किये गये

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

प्रयास, भारत में स्वच्छ भारत मिशन, बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रमों ने एक सोच से प्रारम्भ होकर किसी न किसी रूप में समाज में योगदान दिया है।

अर्थात् यह कहा जा सकता है कि एक बूँद को केवल बूँद समझना, नासमझी है क्योंकि जब बूँदे मिलती हैं तो बाढ़ आती है यह बाढ़ सकारात्मक एवं नकारात्मक रूपों में हो सकती है।

'यदि सभी एक रास्ते पर जा रहे हैं तो ऐसा बिल्कुल नहीं होता कि वह रास्ता सही हो।'

'पागल लोग ही इतिहास रचते हैं।'

'मेरे सीने में ना सही, तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी मगर, आग लगनी चाहिए।'
— दुष्यन्त कुमार

52/125

→ निबंध की विषय-वस्तु अच्छी है।
→ निबंध का प्रस्तुतिकरण भी ठीक है।
→ निबंध में और तारतम्यता एवं रोचकता लाने का प्रयास करें।